Sem. 4
MJ-7

नागरी लिपि की वैज्ञानिकता

भारतवर्ष की प्राचीन ब्राह्मी लिपि से विकासित देवनागरी लिपि में अनेक प्राचीन और अर्वाचीन भाषाओं का लेखन किया जाता है। यह लिपि पाणिनि के प्रयास से व्यवस्थित रूप प्राप्त कर 11 स्वरों और 33 व्यंजनों से युक्त बनी। टंकण की तकनीकी सुविधा की दृष्टि से इसके लिपि-संकेतों में आवश्यक परिवर्तन और संशोधन भी किए गये हैं। इसकी वर्णमाला एक अत्यन्त तर्कपूर्ण ध्वन्यात्मक क्रम में व्यवस्थित है, इसी कारण अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक संघ ने अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक वर्णमाला के लिए मामूली परिवर्तनों के साथ इसी क्रम को अंगीकार किया है।

किसी लिपि को वैज्ञानिकता की तुला पर तोलने के लिए मुख्यतः तीन बिन्दुओं पर ध्यान दिया जाता है। वे हैं —

(क) भाषा में जितनी उच्चारण-ध्वनियाँ हों, उन सबके लिए अलग-अलग लिपि-चिह्न हो।

(ख) प्रत्येक लिपिचिह्न द्वारा केवल एक उच्चारण-ध्वनि का बोध हो।

(ग) एक उच्चारण-ध्वनि का बोध करानेवाला केवल एक ही लिपिचिह्न हो।

भाषावैज्ञानिक दृष्टि से नागरी लिपि अर्ध-अक्षरात्मक लिपि है, जो विकास क्रम में प्रौढ़ अवस्था है। इसके बाद ही वर्णात्मक लिपियों (रोमन आदि) का विकास हुआ। सर्वाधिक वैज्ञानिक अवस्था ध्वन्यात्मक लिपि मानी जाती है, जो कोई भी लिपि नहीं है। नागरी लिपि के स्वर वर्ण वर्णात्मक हैं, तो व्यंजन वर्ण अक्षरात्मक। इन व्यंजनों की 'अकार' ध्वनि का उपयोग केवल उच्चारण-दृष्टि से है, तत्वतः ये भी वर्ण हैं। अतः तात्विक दृष्टि से नागरी लिपि ध्वन्यात्मक ही है। वास्तव में यह वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरी उतरनेवाली लिपि है, क्योंकि:-

① यहाँ एक ध्वनि → एक लिपिचिह्न है।

② एक लिपिचिह्न → एक ध्वनि है।

③ स्वर और व्यंजन का तर्कसंगत क्रम-विन्यास है, जिसे उच्चारण-स्थान को ध्यान में रखकर बनाया गया है।

(4) भारतीय भाषाओं की दृष्टि से वर्णों की पूर्णता एवं सम्पन्नता (52 वर्ण हैं) है।

(5) उच्चारण और लेखन में एकरूपता है।

(6) लेखन और मुद्रण में एकरूपता है। (रोमन, अरबी आदि में मुद्रित और ~~लिख~~ हस्तलिखित रूप अलग-अलग हैं।)

(7) लिपि-चिह्नों के नाम और ध्वनि में अन्तर नहीं है। (रोमन का वर्ण - B (बी) की ध्वनि 'ब' है)

(8) यह स्माल-कैपिटल वर्ण तथा प्रिन्ट-कर्सिव रूप की अवैज्ञानिकता से मुक्त है।

(9) मात्राओं के विधान में तार्किकता व स्पष्टता।

उपर्युक्त ~~बि~~ बिन्दुओं से स्पष्ट है कि नागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है। चूँकि यह अर्ध-अक्षरात्मक है, इसलिए स्वरयुक्त व्यंजन ही वर्णमाला में होते हैं। स्वरमुक्त व्यंजन का लेखन हलन्त के उपयोग से संभव होता है। भारतीय भाषा की ध्वनियों के ~~ले~~ लेखन में अन्य लिपियों का उपयोग असंभवप्राय है; जैसे 'राम' का लेखन रोमन में 'RAMA' होगा और पहला 'A' यदि 'आ' ध्वनिसूचक है तो दूसरा 'A' 'अ' ध्वनिसूचक कैसे होगा। जबकि अन्य भाषा की ध्वनियों का लेखन नागरी लिपि में संभव हो जाता है। जैसे रोमन - ~~[illegible]~~ 'JOHN' का उच्चारण होता है - 'जॉन' रूप में, जिसका लेखन नागरी लिपि में सुगम है। क्योंकि यहाँ वर्ण-विन्यास इतना वैज्ञानिक है कि जैसा उच्चारण किया जाता है, वैसा ही लेखन यहाँ संभव है और जैसा लेखन किया जाता है, वैसा ही उच्चारण होता है। शायद इसीलिए प्रख्यात भाषा-वैज्ञानिक डॉ॰ सुनीति कुमार चटर्जी लिखते हैं - "संसार की लिपियों में भारतीय लिपियों की यह विशेषता उल्लेखनीय है कि इनके वर्णों के क्रम नितान्त वैज्ञानिक हैं।" केवल भारतीय भाषा-वैज्ञानिक ही नहीं, आइजक पिटमैन और मोनियर विलियम्स सरीखे ध्वनिशास्त्री भी मानते हैं कि "संसार की कोई लिपि यदि सर्वाधिक पूर्ण है तो वह ~~ए~~ एकमात्र देवनागरी ही है।"